अर्जुन का धर्मसंकट

आलेख: डैनियल बी. हेबर फोटो: स्टीफन बर्गर

70 मिनट का चैंबर ऑपेरा गीता पर केंद्रित है। इसमें आधुनिक जैज़ और पारंपरिक भारतीय संगीत का मेल है।

विचित्र संयोग है कि पिछले साल न्यू यॉर्क सिटी में मंचित तीन अवांगार्द ऑपेरा प्रस्तुतियां भगवद्गीता पर केंद्रित रहीं। पहलेपहल 1980 में गांधीजी के जीवन पर आधारित फिलिप ग्लास के समकालीन ऑपेरा *सत्याग्रह* में एक लिब्रेटो के रूप में दिखी यह प्राचीन कृति अप्रैल 2008 में न्यू यॉर्क मेट्रॉपॉलिटन ऑपेरा में अवतरित हुई। पिछले पतझड़ में जॉन एडम की प्रस्तुति *डॉ. एटॉमिक* में भी पहले परमाणु परीक्षण के दौरान हुए विस्फोट पर परमाणु विज्ञानी रॉबर्ट ऑप्पनहाइमर के स्वत:स्फूर्त उद्गार 'ब्राइटर दैन अ थाउज़ैंड सन्स' में गीता की गूंज को संदर्भित करते गीता के श्लोक गूंजे। लेकिन गीता को पहली बार किसी ऑपेरा की केंद्रीय विषयवस्तु के रूप में इस्तेमाल किया गया। अमेरिकी संगीत निर्देशक डगलस जे. कुऑमॉ के ऑपेरा 'अर्जुनाज़ डायलेमा' में कृष्ण और अर्जुन केंद्रीय पात्र हैं।

ब्रुकलिन एकेडेमी ऑफ़ म्यूज़िक के हार्वी थियेटर में टॉनी बूट (बाएं) अर्जुन और जॉन केली कृष्ण की भूमिका में।

नवम्बर 2008 में ब्रुकलिन एकेडमी ऑफ़ म्यूज़िक के हार्वे थियेटर में 'अर्जुनाज़ डायलेमा' की तीसरी और अंतिम प्रस्तुति के बाद एशियाई अमेरिकियों और न्यू यॉर्क के अन्य वासियों ने खड़े होकर करतल ध्वनि से अपना प्रशंसा भाव व्यक्त किया। न्यू यॉर्क टाइम्स के 7 नवम्बर के अंक में छपी समीक्षा 'वैरियर प्रिंस फ्रॉम इंडिया रैसल्स विद डेस्टिनी' में इस अमेरिकी ऑपेरा को ''मर्मस्पर्शी और अकुंठभाव से उद्दात'' कहा गया। ऑपेरा टुडे वेबसाइट ने इस ऑपेरा की प्रशंसा करते हुए लिखा ''प्रस्तुति की भव्यता अवधारणा की भव्यता से मेल खाती है।''

'अर्जुनाज़ डायलेमा' से पहले कुऑमॉ टेलिविजन चैनल एचबीओ के लम्बे समय से चल रहे धारावाहिक ''सेक्स एंड द सिटी'' के उत्तेजक, सनसनाते, साल्सा शैली के थीम संगीत (यह इस नाम की फ़िल्म में भी इस्तेमाल किया गया है) के

कार्यक्रम प्रस्तुत करने के दौरान बूट (बाएं) और केली (बीच में)।

रचनाकार के रूप में ही जाने जाते थे। सत्तर मिनट की अवधि का चैम्बर ऑपेरा 'अर्जुनाज़ डायलेमा' उनकी सबसे महत्वाकांक्षी संगीत रचना है। आधुनिक जैज़ और परम्परागत भारतीय संगीत रूपों को सहजता से एक सूत्र में पिरोते हुए 'अर्जुनाज़ डायलेमा' आज भी संगत प्राचीन दुविधाओं की तलाश है- युद्ध की घड़ी में अंतरात्मा की पुकार और योद्धा के दायित्व का द्वन्द्व, बदलते संसार में आत्मज्ञान की खोज।

अर्जुनाज़ डायलेमा की सीडी पर छपे वक्तव्य में कुऑमॉ कहते हैं, ''अर्जुनाज़ डायलेमा के लेखन ने मेरे लिए गहन दार्शनिक विषयों पर मनन करते और इन प्रश्नों की सांगीतिक भाषा में अभिव्यक्ति पर विचार करते काफी समय बिता पाना संभव बनाया।''

वह कहते हैं, ''मेरे लिए ज्ञान की अर्जुन की तलाश- जीवन कैसे जिया जाए, मनुष्य किसके लिए लड़े- रणक्षेत्र पर ही नहीं, दैनन्दिन साधारण जीवन में भी प्रतिबिम्बित होती है। अपने उत्कृष्ट क्षणों में मैं मनुष्य मात्र में अन्तर्निहित दिव्यता को छू पाने की कामना के फलितार्थ के बारे में सोच पाता हूं। ऐसे क्षणों में मैं संसार में मनुष्य बने रहने, और अच्छा जीवन जीने की कामना जैसे एकदम मूलभूत प्रश्नों से जूझता हूं।''

छह गायकों (भारतीय गायक, टेनॅर और चार सदस्यीय स्त्री गायक समूह) और बारह वाद्यकारों (तंत्रीवाद्य चतुष्टक, पियानो, दो सुषिर वाद्य, दो तालवाद्य, तबला और जैज़ सैक्सोफोन) का उपयोग करते हुए तैयार की गई यह संगीत रचना पश्चिमी वाद्यवृंद, हारमनी और रूपों के साथ उत्तर भारतीय संगीत प्रस्तुति शैलियों, स्वर संगति ढांचों और लय प्रारूपों का उपयोग करता है। उत्तर भारतीय आलाप एक पश्चिमी टेनॅर और चार सदस्यीय गायकवृंद से एकरूप होते हैं। आशु प्रस्तुति दोनों ही संगीत परम्पराओं का हिस्सा है और भारतीय गायक, तबला वादक और जैज़ सैक्सोफोन वादक ने अपनी-अपनी परम्पराओं के अंदर हर्षातिरेक और उदारता की अभिव्यक्ति को संभव बनाया। इस कृति के पीछे मूल प्रेरणा सीडी पर गाने वाले भारतीय संगीतज्ञ अमित चटर्जी की प्रतिभा का उपयोग था लेकिन रॉबिन गुआरिनो द्वारा निर्देशित ब्रुकलिन एकेडमी की प्रस्तुति में पाकिस्तानी *कव्वाली* गायक नुसरत फतेह अली खां के शागिर्द अफ़गान गायक हुमायूं खां ने कृष्ण को स्वर दिया है तो टेनॅर टोनी बूते ने अर्जुन को। बूते *सत्याग्रह* में भी गा चुके हैं।

भारतीय जानते हैं कि भगवद्गीता के केंद्रीय पात्र क्षत्रिय योद्धा अर्जुन और उनके सारथी सखा विष्णु के अवतार कृष्ण हैं। गीता में कौरवों और पांडवों के बीच ऐतिहासिक युद्ध के दौरान वार्तालाप से संबंधित महान दार्शनिक विचार हैं। (दो दशक पहले ब्रुकलिन एकेडेमी ने पीटर ब्रुक की महाभारत की नौ घंटे की प्रस्तुति की भी मेज़बानी की थी।)

कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल, जहां हज़ारों योद्धा मौजूद हैं, के बीचोबीच होने के बावजूद इस प्रस्तुति में मंच पर सिर्फ़ कृष्ण और अर्जुन नज़र आते हैं- जो चटक पोशाक पहने संगीतकारों के ऊपर दिखते हैं।

कुरूक्षेत्र की रणभूमि पर कौरवों और पांडवों के बीच लड़े जा रहे युद्ध की निर्णायक घड़ी में अर्जुन योद्धा राजकुमार की हैसियत से उलट किंकर्तव्यविमूढ़ होकर शस्त्र-अस्त्र छोड़ देता है। क्षत्रिय होने के नाते युद्ध करना उसका धर्म है लेकिन वह शत्रु पक्ष में खड़े मित्रों, कुलवृद्धों और गुरुजनों पर वार नहीं करना चाहता। उसके सामने धर्मसंकट यह है कि वह क्षात्रधर्म का पालन करे या अपने कुलवृद्धों और बन्धुबान्धवों के मरण का करण बने? तब कृष्ण उसे राह दिखाते हुए उसे कर्तव्य का ही नहीं, दृश्यमान जगत की मायामयी प्रकृति का भी भान करवाते हैं।

इस प्रस्तुति के केंद्र में संगीत है, चाक्षुष बिम्ब और दैहिक भंगिमाएं नहीं। यहां न कृष्ण के विराट स्वरूप की झांकी है और कृष्ण लगभग साधारण पोशाक पहने हैं। सिर्फ अर्जुन युद्ध के मैदान के रथ की वल्गा थामे, पूरे योद्धावेष में दिखते है जबकि युद्ध क्षेत्र की विभीषिका और कृष्ण की दिव्यता का भान दर्शक को अपनी कल्पना के ही माध्यम से हो पाता है। ऑपेरा के मंचन में कृष्ण के विराट स्वरूप को दिखाने के लिए पांरपरिक दृश्यों का सहारा नहीं लिया गया है।

भारतीय उपमहाद्वीप के दर्शकों को इस प्रस्तुति में भव्य पौराणिक साजसज्जा की कमी खल सकती है। एशिया सोसायटी में संगीत निर्देशक के साथ हुई चर्चा का संचालन करने वाली न्यू यॉर्क की भारतीय पत्रकार विभूति पटेल ने कहा भी कि उन्हें ''कुऑमॉ द्वारा तैयार की गई जैज़ और भारतीय शास्त्रीय संगीत की गंगा जमुनी धारा, टोनी बूते का बेहतरीन गायन और बादल रॉय का अद्भुत तबला वादन अच्छा लगा'' लेकिन प्रस्तुति से ''वह उतनी खुश नहीं हो सकीं।''

अगर कुछ दर्शक पौराणिक दृश्यावली की कमी या कृष्ण के वेष की साधारणता से हतप्रभ हुए भी तो हमें याद रखना होगा कि इस चैम्बर प्रस्तुति में ज़ोर आन्तरिक मानसिक द्वन्द्व पर है। जैसा कि सीडी

ऊपर: कॉरस के सदस्य अनीता जॉनसन (बाएं से), बोरा यून, कर्स्टन सोलेक, सूज़ैन हानसेन और बारबरा रीरिक।

एल्बम में अपनी टिप्पणी में संगीत विद्वान जॉन शेफर ने लिखा है, ''अर्जुनाज़ डायलेमा का कथाक्रम भले ही एक भव्य, पौराणिक मंच पर खुलता हो, भले ही इसमें आस्था, कर्तव्य और संसार की प्रकृति की भव्य अवधारणाएं निहित हों, तत्वत: यह आंतरिकता की कहानी है जो चेतना में घटित होती है।'' इसलिए चैम्बर ऑपेरा या ऑरेटॉरियो कहा जाने पर भी यह असल में एकालाप है। जैसाकि कुऑमॉ कहते हैं,''सभी स्वर, सभी संवाद ... असल में अर्जुन के मानस में ही उपजते हैं।''

इसके ढांचे को स्पष्ट करते हुए जॉन शेफर लिखते हैं कि ऑपेरा द्वन्द्व, उत्तर और दृष्टि के तीन खंडों की सुपरिचित पश्चिमी तर्ज़ पर है, लेकिन यह भारतीय अंदाज में राग के स्वरूप की तरह धीरे-धीरे खुलता है। प्रस्तुति का अंत कृष्ण के अनेक नामों के गायन से होता है और कुछ-कुछ नाम संकीर्तन का सा प्रभाव छोड़ते हैं।

नितान्त सांसारिक 'सेक्स एंड द सिटी' से उदात्त 'अर्जुनाज़ डायलेमा' तक की अपनी यात्रा के बारे में स्पैन से बात करते हुए कुऑमॉ ने कहा कि उन्होंने गीता से सीखा है कि मनुष्य को अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना चाहिए, और उनका कर्त्तव्य संगीत रचना है। वह कहते हैं, ''गीता ने संसार में अपनी जगह को देखने की मेरी दृष्टि को प्रभावित किया है। कर्म के फल की चिन्ता किए बिना सही कर्म करने के विचार ने संसार को देखने की मेरी दृष्टि को बदला है, समृद्ध बनाया है।'' उन्होंने आशा व्यक्त की कि दर्शकों पर यही प्रभाव उनका ऑपेरा भी डालेगा।

कुऑमॉ ने कहा, ''मेरे लिए संसार में होने में संगीत रचना शामिल है, और मेरे सामने खड़े प्रश्नों में से एक प्रश्न है- अपनी कामनाओं और संघर्षों को प्रतिबिम्बित करने वाली संगीत रचना कैसे तैयार करूं। मुझे लगता है कि कला और सौंदर्य दुर्बोध को- वह जो दिखता और अनुभव किया जाता है लेकिन अक्सर अभिव्यक्ति के परे बने रहता है- संदर्भित कर सकते हैं। भगवद्गीता में ऐसे अनेक प्रसंग आते हैं जहां संसार का होना और उसमें अपनी जगह का भान होता है। 'अर्जुनाज़ डायलेमा' की रचना के पीछे कुछ हद तक कौतूहल, आश्चर्य, भय, विराटता और आशा के उस भाव की अभिव्यक्ति का उद्देश्य है।''

ऑपेरा टुडे ऑनलाइन में संगीत समीक्षक जॉन योहालेम लिखते हैं, ''अर्जुनाज़ डायलेमा एक आधुनिक ऑपेरा है, गायन के माध्यम से सुनाई गई एक कहानी।'' और क्यों न हो , गीता आखिर प्राचीन परम्परागत संस्कृतियों की मौखिक परम्परा में एक गीत ही तो है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

डगलस जे. कुऑमॉ
http://www.douglasjcuomo.com/arjuna.html

बाम हार्वी थियेटर
http://www.bam.org/view.aspx?pid=120

अपनी नियति से जूझते भारत के योद्धा राजकुमार
http://www.nytimes.com/2008/11/07/arts/music/07arju.html

***डेनियल बी. हेबर** स्वतंत्र पत्रकार हैं। वह न्यू यॉर्क के मूल वासी हैं और अपना समय कभी न्यू यॉर्क और कभी दक्षिण एशिया में बिताते हैं।*